

15

Consult
with

DPN S354

Title : ? उपोषध व्रत UPOSAḌHA VRATA

Run. No. 6045

Cat. No.

Micro. No.

Subject Ritual विधि

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 12 + 28

Folios 12 Lines (in a page) 7
no folio numbers. पन्नाङ्कः ५२।। १२।। १०।।

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhu. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / reverse side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः श्री वज्रसत्वाय ॥ नमो रत्नत्रयाय ॥ अथाशोको महिपालसद्वृ-
 ॐ नमः श्री वज्रसत्वाय ॥ नमो रत्नत्रयाय : श्रीगणेशाय - -

10

5

0

5

10

15

20

25



25

20

15

10

5

0

CENTIMETERS



ॐ नमः श्रीवक्रसखाय ॥ ॐ नमः जलदयाय ॥ ॥ अथ ॥ कामहिपालसद्वृत्तचरणासु कथाउपगुं गुरु
 नखारययारु कृतांजलि रुदनं ॥ अहो मिच्छामि वनराजसु पाषाणस्य पुन्यविद्वानं च सर्वथा वक्तुमर्ह
 मिच्छामि पृच्छामि नन्दनस्योस्मात्पुत्रं च नमः ॥ ॐ नमः श्रीवक्रसखाय ॥ सर्वहसुगनवृद्धधर्मराजसु अग
 मसु समस्तद्वयगवन्मात्रजिलाकजीसजिनसु गिरिहृदयवत्तद्वयमसमेकरेडरगनसाजि
 ॐ नमः श्रीवक्रसखाय ॥ प्राणमालका अयनरायधनका सूर्यार्चगुण्यादार्चपञ्चगव्याश्च धन
 गुत्रमभिलिखिसमाधि ॥ सर्वहसुगनवृद्धधर्मराजसु अगमसमेकरेडरगवन्मात्रजिलाकजीसजि

25

20

15

सम्पाययो ॥ ॥ सम्पायमूनी उगं ह स्ता कृ सा प्रदक्षिण ॥ प्रसम्यदीक्षु अपा र्धनिषसा द कृ ना ऊलि ॥
 ॥ ॥ अथ सो एग वा दृष्टा नं विप्रवृ ग धा पित ॥ जाननी पस्वयं चैव म पृ च्छ न का प ॥ ॥ लोडि
 क रू तु ना क न दी र्पा रू स्म ध्वान खा ४ प चि त्रु का कृ भ र्ग न प्रव द स्वा स्य का प ॥ ॥ इति पृ ष्ठी तिन
 द स वा णि शा दान ह्म म ॥ एग व रू पु न र्न स्ता कृ ना ऊ लि पृ ग व द ॥ ॥ एग मा हं व ग ध्व मा सा
 प वा स मा च य ॥ अ न न भ्वा दी र्पा ग नू पृ का कृ भ च म ॥ ॥ इति ग ना दि गं ध्वा एग वां ध्व मूनी
 ध्व ॥ गं वा णि सृं धि कं रू य ४ प च्छ वृ ग का प ॥ ॥ धि कृ क ना लि ला ष स कृ ग क रू वृ गं त्व या ॥ क
 मि व र्पा णि या ना नि ग स्त प व कृ म र्ह सि ॥ ॥ इति पृ थ मूनी द स भ्वा सो द्रा म्भ पि च ॥ एग व रू

10

5

सुनासिना विज ह प्र ल क ले न ॥ रि कृ रि ४ आ व के ४ ध्वं वा धि स त्व ग ले पी प ॥ ॥ ग दानं सु ग नं दृ ष्ठा
 सु रू मी द न ना रू क ॥ वृ ण हा का द या द वा ४ दे रू ग ध्व र्वा कि न ना ॥ ॥ सि कृ वि या ध वा ध्व व य रू गु ष
 के वा रू सा ॥ ग पुं रू ना रू ना रू डा ला क पा ला म र्ही क ॥ ॥ या ग ना य न या वि दृ म्भ ष या वृ म्भ चा प
 ४ ॥ जा जान ४ रू षि या वे ४ म र्हा मा रू ध्व मं पि ४ ॥ ॥ इति न ४ र्थ वा हा ध्व धी न ना व नि क रू था ॥ ॥
 व म न्नी प ला का ध्व म रू मी ४ सु व भ्वा रू का ॥ ॥ पू जारो ४ पू र्ण त्वा च स म न ४ ॥ प चि वृ ष प च स्त रू ग रू
 सु र्व स मा रि ना ॥ ॥ ऊ ना ना वि वा द कृ ना ना प्र को प क ल ना दि क रू प ध्व धि ना स गृ ह ध्व त्वा मा प्र
 ग सा वि सा स क रू म अ थ भ्वा का म रि या ला म वृ ना च ॥ स क रू प गृ क रू पु न त्वा रू य वा ह क ना कृ लि
 सम ॥ ॥ य म ग रू स मा रू न स व रू रू म ॥ स ४ ॥ न म म स व रू रू स ग न वृ द्ध ध र्म ग रू न
 ॥ ॥ स रू रू स ॥ ॥ मि स म ॥ ॥ स व रू रू स ग न वृ द्ध ध र्म ग रू न

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

25

20

15

10

5

0

कनकमाला

॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥ लया चास्मत्कृमा गाय कन्यादानं कुरु मयि लवण कृपया
 वन ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥ कन्यादानं लवण कृपया लवण कृपया ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं
 कं ॥ कलया लपि निगुणानि ॥ जिमिसेखं कुरु विनियोगः ॥ अर्थः ॥ नना विना ॥ लया चास्मत्कृमा
 मा गाय ॥ कलया लपि नीमामचो ॥ जिमि कायमचायान ॥ कन्यादानं कुरु मयि कन्यादानं याना विना
 धिकल ॥ लवण कृपया लयन ॥ कलया लपि नीग कृपया लवण कृपया ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥
 प्राफुल ॥ कथा ॥ लवण कृपया लवण कृपया ॥ कलया लपि खना सिपि कृपया ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥
 लवण कृपया लवण कृपया ॥ कलया लपि नि सदा को ॥ कलया लपि ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥
 अर्थः ॥ कामे हि याल सदा च ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥
 अर्थः ॥ कामे हि याल सदा च ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥

कनकमाला

यनं समासाय पुनः प्रवमलषण ॥ ॥ सर्वरूपं गीतं जानीया ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥
 प्रवमलषण ॥ ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥
 वीरु ॥ ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥
 वाच ॥ ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥
 या ॥ ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥
 नच ॥ ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥
 ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥ अर्थः ॥ अहं वचनं कं प्रार्थयामी मम मनः ॥

25

20

15

वासिष्ठावापनावृणी ॥ नक्षधर्मीमृगपातुसमिच्छत्समुपाययो ॥ समुपायमूनी नृपदृष्ट्या कृत्वा प्रदक्षिणं ॥
 प्रसम्यदक्षिणपार्श्वनिषसादकृतां जलिः ॥ अथासीत्तद्वानृष्ट्या नृविपुष्वनध्यापय ॥ जानन्नापि स्वयंचेव
 मयुच्छद्वगकाचसं ॥ एतद्विजहन्नुना कनदीर्घास्मत्तद्वानृष्ट्या ॥ पवित्रा कृत्वा नृपवदस्वास्वकाच
 सः ॥ इति गृष्टा कनदीर्घा वासिष्ठावापनावृणी ॥ एतद्विजहन्नुना कनदीर्घास्मत्तद्वानृष्ट्या ॥ पवित्रा कृत्वा नृपवदस्वास्वकाच
 नक्षधर्मीमृगपातुसमिच्छत्समुपाययो ॥ समुपायमूनी नृपदृष्ट्या कृत्वा प्रदक्षिणं ॥ प्रसम्यदक्षिणपार्श्वनिषसादकृतां
 जलिः ॥ अथासीत्तद्वानृष्ट्या नृविपुष्वनध्यापय ॥ जानन्नापि स्वयंचेव मयुच्छद्वगकाचसं ॥ एतद्विजहन्नुना कनदीर्घास्मत्तद्वानृष्ट्या
 पवित्रा कृत्वा नृपवदस्वास्वकाच सः ॥ इति गृष्टा कनदीर्घा वासिष्ठावापनावृणी ॥ एतद्विजहन्नुना कनदीर्घास्मत्तद्वानृष्ट्या
 पवित्रा कृत्वा नृपवदस्वास्वकाच नक्षधर्मीमृगपातुसमिच्छत्समुपाययो ॥ समुपायमूनी नृपदृष्ट्या कृत्वा प्रदक्षिणं ॥

10

5

भीमनामापपाशस्यलाकश्च वस्मत्तुलां शिविवधुर्दुषित्वा च पुत्राय कृत्वा धनं ॥ इति पत्न
 यप्रसंगत्वा कृत्वा च पापदहनो ॥ पुष्पानुमादना कृत्वा याचयितुं ससिंहो ॥ अपस्मादादिक कृ
 ष्यावृत्तं चापि प्रदक्षिणं ॥ वाधित्तुं समाधाय सख्यं भूयः ॥ इति गृष्टा कनदीर्घा वासिष्ठावापनावृणी ॥ एतद्विजहन्नुना कनदीर्घास्मत्तद्वानृष्ट्या
 पवित्रा कृत्वा नृपवदस्वास्वकाच सः ॥ इति गृष्टा कनदीर्घा वासिष्ठावापनावृणी ॥ एतद्विजहन्नुना कनदीर्घास्मत्तद्वानृष्ट्या
 पवित्रा कृत्वा नृपवदस्वास्वकाच नक्षधर्मीमृगपातुसमिच्छत्समुपाययो ॥ समुपायमूनी नृपदृष्ट्या कृत्वा प्रदक्षिणं ॥ प्रसम्यदक्षिणपार्श्वनिषसादकृतां
 जलिः ॥ अथासीत्तद्वानृष्ट्या नृविपुष्वनध्यापय ॥ जानन्नापि स्वयंचेव मयुच्छद्वगकाचसं ॥ एतद्विजहन्नुना कनदीर्घास्मत्तद्वानृष्ट्या
 पवित्रा कृत्वा नृपवदस्वास्वकाच सः ॥ इति गृष्टा कनदीर्घा वासिष्ठावापनावृणी ॥ एतद्विजहन्नुना कनदीर्घास्मत्तद्वानृष्ट्या
 पवित्रा कृत्वा नृपवदस्वास्वकाच नक्षधर्मीमृगपातुसमिच्छत्समुपाययो ॥ समुपायमूनी नृपदृष्ट्या कृत्वा प्रदक्षिणं ॥

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

25

श्रीः वा

श्रीः

20

15

नूनमवका॥ सर्वगवृद्धिधा या ना विरु संख्यापि विघन॥ नत्वेन दुःपुं स्था ना संख्या कर्तु न भवका॥ सर्ववा
 मपि कुं नु ना जाम संख्यापि विघन॥ नत्वेन दुःपुं स्था ना संख्या कर्तु न भवका॥ वीहि नां मापि सर्वेषां सु
 ख्या कर्तु चे भवका॥ नृग दुःपुं स्था ना संख्या कर्तु न भवका॥ नृग सुं स्था प्रमा भत्वं मया कर्तु न भवका॥
 सर्वगुं धा नु क स्ते अजिने पापे न भवका॥ किमव वरु ना कन यस्या पम्य न विघन॥ अयमयम संख्या ५
 य पुं स्था मिनि जगुं जिना॥ यथा ह्यम्या प्रदुःगद प्रमय दुःखे व॥ नृग सुं स्था नृग व नु धां संवा चिमा
 प्रयात॥ यथा ह्यम्या व नं कर्तुं विचलन भव भगन॥ साक भयं कर्तुं कर्तुं प्रजा रो स्ति धि धन न॥ सर्व पाप
 विनिर्मूकानि ४ जागि सुख वा न्मधी ४॥ कलि ना गु भवान् नृगो संवै स म्य संमृद्धि मान्॥ सर्व विघा

10

5

मोगित्य का भप भपिन नृन॥ उपाय धम्य य धृ नृद सो सर्व मृ चना॥ ॥ कृति भस्मा समादि दं धर ता नं हि क
 रि ४ स ४॥ अयान नृम मरु हि कूं सं वा नि भु मला वन॥ ॥ स एव म नी ध जानी हि विघा पा ध म मा म क ४॥ स्व
 रि दि व सु खं नृ क व स न सा म प ४ स ४॥ ॥ न स्या त्यो नृ प दृ कूं व नृ नृ स मा स न ४॥ यदि वा कृति स न ध म
 न कूं धु य समा हि न ४॥ ॥ य द ये ए ग कं क स्या स हा स्या रि भ रि कृ रि ४॥ अव सृ नृ क न का पं ध वि रो प स
 नि वा सि न॥ ॥ सर्व सत्वा हि ना र्थ य स रु म्पा रि समा दि भ न ४॥ यदि म ध्मा क ए जा सि ला क कृ ता स मा व स
 न॥ ॥ न सिं भ स म य नृ द व पु नृ उ पा य ध ४॥ पंच द व नृ नृ ४ स र्ध ध म्मा नृ सु ना ग ना॥ ॥ जा नो स म
 दि मा नृ वा दि व पु ला व वा सि नं ४॥ सर्व ज न व नं कृ ता पा ग कृ र्ग ना ला य॥ ॥ नृ ए ग व नृ ४ पा दो न ला ४

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

25

श्रीः वा

20

15

पुनः कृताञ्जलिः ॥ गेयदेवैः सहैका नृधर्म आनुमृषासुतः ॥ ॥ नृणां यत्तु गवां सुसुखाविभुक्तिनाभयं ॥ सु
 क्षमार्थसंप्रचयिस्तु च समादिनः ॥ ॥ सन्धर्मा मृगं पीत्वा सुहृदेः प्रमादिनः ॥ माचधर्मविमुक्तात्मा वा
 धिष्टुस्मात्तु ॥ ॥ सत्कायदृष्टिः सेलागर्विभित्तिव जा नृनिर्हिषं न वक्तुमशक्यं ॥ यथा
 धरयः ॥ ॥ सद्धर्मदृष्टसुखे भिन्नदानसुमनयः ॥ अहाधर्ममया लक्ष्मं सत्परायणाय ॥ ॥ वद
 नचपभोनाथगच्छामि न वलसुदा ॥ धन्यासि एव न वसुदुल्लभममनः ॥ ॥ एगवन्निदमस्माकं न पिना
 नामयाकृतं ॥ न जाह्नवनदवेभ्य न हस्तजनवाभवे ॥ ॥ उच्छिपिनायदस्मादी प्रधि जाह्नमहादविधा
 लपिना श्रुतिः सेलाधुमत्सर्वं न प्रसादय ॥ ॥ नवानृणावापि हि नृणां च पायमार्गं वक्तुमशक्यं

10

5

कः ॥ अथा दृगात्सर्वगणिः संप्रस्थानिर्वाहामार्गं मया मलुक् ॥ ॥ स्वदाशुया चोपमपकदावमया
 शुद्धं सुविभुक्तं च ॥ पापं चेन्न कपय नार्थकानं नीलं ॥ ॥ स्वार्थवपापमस्मि ॥ ॥ नचवचनं जा
 मपपुत्रिने विगनं जमजं जामपसाभय ॥ एव सत्सु सुदुस्तरदर्शनसुदुल्लभममनसुवदर्शनं ॥ ॥ अ
 वनमगनं पलमवपभ्यपभ्येष्टावतिवद्राजा नृहर्षः ॥ यपि संमचदक्षिर्लजिनापिसूत्रलाकारिमुख
 दिवैरुगाम ॥ ॥ नगाश्मीरिक्तयः सर्वे दृष्टा जावलासितं ॥ सुदिग्ध एगवं नृदयं च मयं नगाः ॥
 ॥ ॥ कएदं नृसमाया नाश्रय जातो नवानिक ॥ वृक्षाथवामपन्दी कालाकपालाभ्यापय ॥ ॥
 सुपुनैरिक्तैः पृष्ठा एगवानाश्रयैः ॥ नवज्जनापिदवन्नावालाकाविणायय ॥ ॥ यदृष्टं

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

25

20

15

10

5

0

श्रीः वा

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

3

ॐ नमः श्रीवक्रसत्ताय ॥ नमो वल्लभाय ॥ अथाश्वत्थामहिपालसद्वचनसूक्त
 ॐ नमः श्रीवक्रसत्ताय ॥ नमो वल्लभाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ कुरुक्षेत्राय नमः सप्तमवक्रसत्ताय
 ॐ नमः एगवगसर्वदुर्गाय चिच्छाधराय श्री श्री श्रीवक्रसत्ताय ॥ नमो वल्लभाय ॥ अथाश्वत्थामहिपालसद्वचनसूक्त
 महिपालसद्वचनसूक्त ॥ अथाश्वत्थामहिपालसद्वचनसूक्त ॥
 सर्वदुर्गाय नमः सर्वदुर्गाय नमः सर्वदुर्गाय नमः ॥ ॐ नमः श्रीवक्रसत्ताय ॥ ॐ नमः श्रीवक्रसत्ताय ॥
 ॐ नमः श्रीवक्रसत्ताय ॥ ॐ नमः श्रीवक्रसत्ताय ॥ ॐ नमः श्रीवक्रसत्ताय ॥

CENTIMETERS

